अध्यापक शिक्षक की डायरी-III

कविता को आगे बढ़ाना

रविकांत

बच्चों के साथ मिलकर किसी कविता को आगे बढ़ाने का काम रोचक भी हो सकता है और कल्पनाओं के अनंत आकाश में ऊंची उड़ान भरने का एक मौका भी। यही सोचकर कुछ अध्यापिकाओं के साथ बच्चों की कुछ ऐसी कविताओं को चुनकर काम किया गया, जिन्हें आगे बढ़ाना काफी आसान था। इस काम के लिए खास तौर पर 'तीन मेंढ़क' तथा 'रामनारायण बाजा बजाता' नामक कविताओं को चुना गया। अध्यापिकाओं के साथ काम करते वक्त इन्हें आगे बढ़ाने का काम किया गया। बड़ी आसानी से कई अध्यापिकाओं ने इन कविताओं के एक या दो अंतरे गढ़ लिए। इन अंतरों को मूल गीत/कविता की धुन में गाकर भी देखा गया व उसका आनंद सभी ने उठाया। इस अनुभव से उत्साहित होकर उनमें से कुछ अध्यापिकाओं ने इस काम को बच्चों के साथ करने की ठानी।

जब उन्होंने इस काम को सरकारी विद्यालयों की कक्षा एक से तीन के साथ किया तो पाया कि दो-तीन बच्चों को छोड़कर बाकी बची पूरी कक्षा इन कविताओं को आगे बढ़ाने में कामयाब नहीं हो पाई। या तो बच्चे कविताओं में आई चीजों के ही नाम दोहरा दे रहे थे या कोई जवाब नहीं देकर अध्यापिका की तरफ ताक रहे थे। अंत में थक-हार कर अध्यापिकाओं ने खुद ही कुछ चीजों के नाम बताए और उनकी आवाज बताकर उसे गाकर सुना दिया। इससे उनका काम तो पूरा हो गया लेकिन मन में इस बात का असंतोष बचा रह गया कि बच्चे इन कविताओं को आगे नहीं बढ़ा पाए।

इस अनुभव को उन्होंने अपने सहकर्मियों की बैठक में सांझा किया और सभी के सामने उपरोक्त सवाल रखा और यह भी पूछा कि बच्चों के साथ ऐसा क्या काम किया जाए कि बच्चे इन कविताओं को आगे बढ़ाने में कामयाब हो पाएं?

पहले तो इस सवाल को समझा गया कि इन कविताओं को आगे न बढ़ा पाने की क्या वजह रही होगी? क्योंकि उसी की बुनियाद पर कविताओं को आगे बढ़ाने के लिए उपयुक्त तरीका गढ़ा जा सकता था। इसे समझने के लिए सबसे पहले यह देखा गया कि इन कविताओं को आगे बढ़ाने के लिए बच्चे को क्या-क्या समझना चाहिए।

रामनारायण वाली कविता में बच्चों को यह समझना जरूरी था कि रामनारायण हर बार बाजा बजाता है और हर बार बाजे के साथ किसी चीज को बजाता है तथा उस चीज की आवाज कैसे निकलती है यह भी बताता है। यानी बच्चे को हर बार कोई बजने वाली चीज व उसकी आवाज चुननी थी और उसे कविता की लड़ी में पिरोना था। इसी तरह 'तीन मेंढ़क' वाली कविता में उसे यह समझना था कि हर बार किसी नए जानवर

का चयन किया जाना है और उस जानवर की आवाज भी निकालनी है और इन दोनों बातों को कविता में पिरोना है।

रामनारायण का बाजा

रामनारायण बाजा बजाता
सिरी री री री..... सीटी बजाता-2
रामनारायण बाजा बजाता

ढम ढम ढम ढम ढोलक बजाता
रामनारायण बाजा बजाता

टन टन टन टन घंटी बजाता
रामनारायण बाजा बजाता

इस बात के साफ होते ही यह स्पष्ट हो गया कि बच्चों को यह कहने से तो बात समझ में नहीं आ रही है कि इन कविताओं को आगे बढ़ाओ, तो क्या किया जाए। एक अध्यापिका ने सुझाया कि उनके साथ बातचीत की जाए। तो सवाल यह उठा कि उनके साथ बातचीत किस तरह से की जाए कि उस बातचीत के बाद वे इन कविताओं को आसानी से आगे बढ़ा सकें। इस सवाल पर समूह में चुप्पी छा गई। क्योंकि बड़ों के समूह में तो ज्यादातर ने बिना किसी बातचीत के सिर्फ कविता को आगे बढ़ाने की कहने पर उन्हें आगे बढ़ाकर सुना दिया था। यानी कविता को आगे बढ़ाने पर की जाने वाली बातचीत पर तो बड़ों के समूह में काम किया ही नहीं गया था। यह भी साफ हुआ कि अध्यापिकाओं के लिए इस तरह के सवालों की लड़ी पिरोना मुश्किल काम है जिनकी मदद से बच्चे कविता को बुन लें। अतः सभी के साथ इस पर बातचीत की गई कि हम बच्चों से क्या-क्या सवाल पूछ सकते हैं।

सभी के साथ की गई चर्चा से बच्चों के साथ की जाने वाली बातचीत में सवालों की लड़ी कुछ इस तरह से उभर कर सामने आई।

- पहली बार रामनारायण ने बाजे के साथ क्या चीज बजाई? उस चीज से किस तरह की आवाज निकली?
- दूसरी बार रामनारायण ने बाजे के साथ क्या चीज बजाई? उस चीज से किस तरह की आवाज निकली?
- तुम बाजे के साथ किस चीज को बजाना चाहते हो? उससे किस तरह की आवाज आएगी? (जरूरत पड़ने पर बच्चों को एक-दो चीजें व उनसे निकलने वाली आवाजें भी सुझाना ताकि बच्चे उन उदाहरणों की मदद से सोच सकें। कोशिश करना कि वह कोई वाद्य यंत्र न होकर कोई आम-सी चीज हो, जैसे थाली, डिब्बा, आदि)
- अब इस कविता को आगे बढ़ाओ। या अब इसे कविता में गा कर बताओ।

तीन मेंढक

मेंढक तीन घूमने चले
दिन भर गाना बजाना किया

ऐ.... ओ.... चुप ना रहे
रुपया किराया कुछ ना दिया

मेंढक तीन घूमने चले
बकरियां तीन घूमने चलीं
दिन भर गाना बजाना किया

में... में... चुप ना रहीं
रुपया किराया कुछ ना दिया
मेंढक तीन घूमने चले

इन सवालों को बनाते ही यह बात साफ हो गई कि सिर्फ कविता को गाकर/सुनाकर आगे बढ़ाने के लिए कहने पर इन सवालों को उठाने व इनका जवाब खोजने का पूरा दारोमदार बच्चों के कंधों पर रहता है। बड़े व्यक्ति या बड़े बच्चे तो इसे कर लेते हैं लेकिन कक्षा 1 से 3 के कई बच्चों के लिए इसे करना थोड़ा मुश्किल होता है नतीजन कुछ बच्चे इसे करने में कामयाब हो जाते हैं और कई इसे ठीक से नहीं कर पाते। जबकि इन कविताओं पर की गई बातचीत से उन्हें पलट कर कविता को देखने समझने व उसके अंतरों की बुनावट पर सोचने का मौका मिलता है। इन सवालों के जरिए वे कविता के हर अंतरे की दूसरी पंक्ति को बनाने का तर्क समझ सकते हैं। उसके लिए उपयुक्त चीज और उससे निकलने वाली आवाज को सुन सकते हैं और उसे वाक्य में पिरोकर गीत/कविता के मुखड़े के साथ गा भी सकते हैं और इस बात का थोड़ा-सा सुख पा सकते हैं कि उन्होंने भी किसी कविता के किसी अंतरे को रचा। भले ही वह रचना एक ढांचे के तहत की गई हो, रचने के सुख को महसूस कर पाना कोई छोटी बात नहीं होती। लिखते वक्त तो ‘रटने’ को ‘रचने’ में बदलने के लिए सिर्फ वर्णमाला के ट वर्ग के प्रथमाक्षर को हटाकर च वर्ग का प्रथमाक्षर लगाना होता है। लेकिन सीखने के मामले में यह एक ऊबाऊ काम को रचनात्मक व रोमांचक काम में बदल देता है।

इस पूरे काम से यह भी हमारे सामने साफ हुआ कि बड़े जिस काम को मजे-मजे में पूरा कर लें, जरूरी नहीं कि उसी काम को वे बच्चों के साथ भी उतनी ही कुशलता से कर पाएं। यानी किसी काम में खुद आनंद उठाना व उसे पूरा कर लेना एक बात है और उसी काम में दूसरों को आनंद महसूस करवाना व उसे दूसरों से करवा लेना दूसरी बात है। यह अपने आप नहीं आ जाता बल्कि इसे सीखना पड़ता है। इसके लिए या तो हमें लगातार खुद के कामों के बारे में पलटकर व थोड़ा ठहर कर आलोचनात्मक व सृजनात्मक ढंग से सोचना पड़ता है या इस काम को अपने साथियों के साथ मिलकर करना पड़ता है। वैसे भी अगर हमारा मकसद कुछ बच्चों को नहीं बल्कि सभी बच्चों को सिखाना है तो हम किसी काम को बच्चों द्वारा खुद-ब-खुद समझ लेने के भरोसे नहीं छोड़ सकते।

ना बोलने वाली लड़की

कक्षा 9 के बच्चों के साथ काम करने के बाद हम कक्षा अवलोकन करने वाली एक बुर्जुग अध्यापिका के साथ मेरे कक्षा शिक्षण के अवलोकन पर बात करने के लिए बैठे। दो कालांशों में चले काम में से एक कालांश का उन्होंने अवलोकन किया था। वैसे उन्होंने कहा था कि मैं हर रोज उस कक्षा को कम से कम एक कालांश तो पढ़ाती ही हूं। यानी इसमें यह बात छुपी थी कि बाकी की अध्यापिकाएं तो यह भी नहीं करती और बाकी कालांशों में वह भी वही करती है जो विद्यालय की बाकी अध्यापिकाएं करती हैं।

खैर, उनसे पूछा गया कि आपने अवलोकन में क्या काबिले जिक्र बात देखी। उनकी पहली टिप्पणी थी कि मेरी कक्षा में पूरे साल कभी न बोलने वाली लड़की भी आपकी कक्षा में बोल रही थी। उन्होंने अपने अन्य अवलोकन भी बताए, जिसमें उन्होंने एक दो नहीं सभी बच्चों की भागीदारी, काम करने में उनके द्वारा दर्शाए गए उत्साह और किए गए कामों में से खुद को पसंद आए कामों का भी जिक्र किया, लेकिन पूरी बात में कम से कम तीन-चार बार इस बात को दोहराया कि हमारी कक्षा में साल भर चुप रहने वाली लड़की भी बोल रही थी। साफ था कि उन्हें इस बात की हैरानी थी जो छुपाए नहीं छुप रही थी कि हमारी कक्षा में ऐसा क्या हुआ कि एक चुप्पा लड़की भी बोलने लगी। जबकि हम तो उस दिन उस कक्षा के बच्चों से पहली बार ही मिले थे और उन्हें कक्षा में भी पहली बार ही पढ़ाया था। एक बार पहले उस कक्षा में हमने एक कालांश का अवलोकन जरूर किया था लेकिन तब बच्चों से कोई बातचीत व संवाद नहीं हो पाया था।

उस लड़की को हमारी कक्षा में बोलने की हिम्मत मिलने की क्या वजह रही होगी? इस बात को समझने के लिए पहले मैं उनकी कक्षा के अवलोकन के आधार पर उनके काम का तरीका रखूंगा और फिर उसी कक्षा में हमारे द्वारा किए गए काम की एक झलक पेश करूंगा ताकि आप अनुमान लगा पाएं कि क्यों एक अध्यापिका की कक्षा में जो लड़की साल भर नहीं बोलती वह किसी दूसरे अध्यापक की कक्षा में पहले ही दिन बोलने की हिम्मत जुटा पाती है।

वे अध्यापिका अपना वक्त खाली बचाने के लिए 40-40 बच्चों के दो भागों को एक साथ बिठाकर पढ़ाती हैं, यानी करीब 80 बच्चों को एक साथ पढ़ाती हैं। उनकी कक्षा में बैंचें रखने व बैंचों पर लड़कियों के ठुंस जाने के बाद हिलने डुलने की जगह भी नहीं बचती। जब अध्यापिका कक्षा में नहीं होतीं तब वहां बेतरह शोर होता है जिसे वे कक्षा में आने के बाद खुद चीखकर या अधिकारपूर्ण आवाज के इस्तेमाल से चुप करवाती हैं।

पढ़ाने का तरीका उनका बहुत ही सादा व बिना मेहनत वाला और काफी प्राचीन किस्म का है। वे अपनी मेज पर व बच्चे अपनी बैंच पर बैठे रहते हैं। वे बारी-बारी से ऐसी लड़कियों को खड़ा करके पाठ पढ़वाती हैं जो फर्राटे से उस पाठ को पढ़ लेती हैं। बच्चे उस पाठ को सुनकर क्या समझे, इसे जाने बिना वे उस पाठ पर सविस्तार प्रवचन दे देती हैं जिसकी शुरुआत तो पाठ से होती है लेकिन बाद में उसका पाठ से कोई ताल्लुक नहीं रहता। बाद में बताई उनकी राय में वे इसे पाठ को संदर्भ से जोड़ना कहती हैं। उन्होंने सवाल भी उन्हीं से पूछे जिन पर उन्हें यकीन था

कि वह लड़की पूछे गए सवाल का जवाब दे सकती है। बाकी सभी बच्चों की भागीदारी अध्यापिका द्वारा बोले गए वाक्यों के आखिर में खाली छोड़ी गई जगह को भरने के लिए ऊंची आवाज में व एक सुर में एक शब्द को बोलने की होती है। पाठ के आखिर में आए सभी सवालों को मौखिक हल करवाने के बाद वे उन्हीं सवालों को बच्चों को कापी में हल करने के लिए दे देती हैं। इसमें यह बात भी छुपी है कि उन्हें पक्का यकीन है कि उनकी छात्राएं खुद उन सवालों को पढ़कर अपने शब्दों में उनका जवाब लिखने के लिहाज से पूरी तरह नाकारा हैं। इसलिए उन सवालों के जवाब किसी एक-दो तेज-तर्रार बच्चों द्वारा सभी को बताए जाने जरूरी हैं। उनके पढ़ाने के तरीके में अकेले बोलने का मौका उन्हीं में से एक-आध को मिलता है जो उनके सवालों का उनका मनचाहा जवाब दे सकती हैं। पूरी कक्षा में ज्यादातर वक्त बाकी बच्चों का प्रमुख काम चुपचाप बैठकर सुनना होता है।

इस तरीके के बरक्स हमने उनकी कक्षा में क्या किया। हमने पहला काम कक्षा के दोनों भागों को अलग करने का किया। इसके बाद बच्चों के साथ मिलकर अतिरिक्त बैंचों को कक्षा के बाहर बरामदे में जमा दिया। पहली बार मेज को उठाते ही एक-दो लड़कियां लपक कर आईं और खुद मेज ले जाने के लिए जिद करने लगीं। उनका भाव यह था कि अध्यापक होने के नाते अपने शारीरिक श्रम के काम में अपने हाथ मैले करना हमारे पद की तौहीन थी। हमारे मना करने पर बहुत जल्द ही उन्होंने इस बात पर ध्यान देना छोड़ दिया कि उनके अध्यापक भी उनके साथ मेज उठा-उठाकर व उनके साथ मिलकर कक्षा के बाहर जमा रहे हैं। वे मजे से हमारे साथ मिलकर मेजों को कमरे से दरबदर करने लगीं। वैसे उनके लिए यह एक अजूबा ही था क्योंकि उन्होंने तो अपने विद्यालय में यही देखा था कि दो फुट दूर पड़ी कुर्सी को अपने पास लाने के लिए भी अध्यापिकाएं हांक लगाकर बीस फुट दूर खड़ी किसी बच्ची को बुलाती थीं ताकि वह कुर्सी जब उनके पैरों के करीब आ जाए तब वे उस पर बैठने का अहसान कर सकें। कक्षा में रखी मेजों को दीवार के सहारे इस तरह से लगाया गया कि वे 'यू' आकार में नजर आने लगें। उन पर बैठी लड़कियां आपस में सभी को देख सकती थीं व बात कर सकती थीं।

सबसे परिचय करने के बाद और अपना परिचय देने के बाद हमने सभी के साथ दो-तीन कविताएं की। सभी ने उन्हें बड़े उत्साह से किया। हाव-भाव भी अच्छे से किए और गाया/दोहराया भी सलीके के साथ। फिर हमने बच्चों को पंचतंत्र की एक सरल-सी कहानी सुनाई। सभी से कहा कि वे उस कहानी का नाम सुझाएं। बच्चों की तरफ से सात-आठ नाम आए। उन्हें बोर्ड पर लिखा।

फिर हमने बच्चों से बातचीत करते हुए उस कहानी के नक्शे पर काम शुरू किया। बच्चे नक्शे के मतलब को समझ पाएं इसके लिए पहले उनके साथ नक्शे पर थोड़ी बातचीत की। उन्हें कहा कि वे आज सवेरे से लेकर अब तक इस कक्षा में किए गए किसी काम से जोड़कर नक्शे पर कोई बात कहें। थोड़ा हिचकिचाने के बाद बच्चों ने कक्षा में मेजों को लेकर किए गए फेरबदल के संदर्भ में नक्शे पर दो तीन बातें कहीं। उनसे कहा गया कि वे अपनी बात एक-आध शब्द के बजाय पूरे-पूरे वाक्यों में बताएं। फिर नक्शे शब्द के अर्थ का मजा लेने के लिए हमने नक्शे के अलग अर्थ पर भी बात की जैसे, *'उसने कहा कि मैं तुम्हारे चेहरे का नक्शा बिगाड़ दूंगा'*, इस वाक्य में नक्शे का क्या मतलब है।

इसके बाद कहानी के नक्शे के हिस्सों के तौर पर कहानी के प्रमुख व गौण पात्र, जगह, समस्या, घटनाएं तथा समस्या के हल पर बातचीत की। बच्चों ने इन सभी के बारे में बताया। उन्हें बोर्ड पर लिखा। अगर बच्चे घटना की जगह कोई एक या एक साथ कई बातें कहते या किए गए काम बताते तो उन्हें सुझाते कि वे एक नहीं कई बातों या कामों के मिलने से बनने वाली घटना को पहचान कर बताएं। अध्यापिका ने काम यहीं तक देखा था। हमने इसके बाद बच्चों के उपसमूह बना कर उन्हें कहानियों की किताबें पढ़ने को दीं। बाद में हरेक उपसमूह ने अपने समूह में पढ़ी गई कहानी का नक्शा चार्ट पर बनाया।

इस पूरे काम में बच्चों के पास बड़े समूह में तथा उपसमूह में अपनी बात रखने व करने का पूरा मौका था। बड़े समूह में तब जब उनसे कहानी का नाम रखने के लिए कहा गया और हरेक के नाम को बोर्ड पर लिखा गया। उनमें से एक-दो नाम एकदम ही अनुपयुक्त थे लेकिन उन पर कोई टीका-टिप्पणी नहीं की गई क्योंकि बच्चे पहली बार किसी कहानी का नाम रख रहे थे। हो सकता है अगली बार हम उनके साथ किसी कहानी का नाम रखने के साथ-साथ उस नाम को रखने के कारणों पर भी बातचीत करें ताकि कारणों को सोचते वक्त बच्चे नाम की उपयुक्तता पर मिलकर विचार करें। इसके बाद लड़कियां कहानी पढ़ते वक्त भी, उसके बारे में आपस में बातचीत कर सकती थीं। उसके चित्रों पर बात कर सकती थीं। फिर कहानी का नक्शा बनाते वक्त तो उनके पास उस कहानी पर बात करने के ढेर सारे मौके थे ही।

अगर आपने दोनों तरीकों पर गौर किया हो तो आपको यह साफ हो गया होगा कि अध्यापिका के तरीके में बच्चों की बहुत ही सीमित व दिखावटी भागीदारी नजर आती है, जिसमें बच्चों को या तो सिर्फ एक शब्द की खाली जगह भरने या मौखिक तौर पर हल करवा दिए गए सवालों के जवाब लिखने के लायक माना जाता है। जबकि हमने शुरू से ही ऐसी विषयवस्तु को चुना जिसे सुनकर बच्चे समझ सकते थे। फिर अपनी बनी समझ की मदद से उन पर करवाए गए काम खुद कर सकते थे, जैसे कहानी का नाम रखना, मिलकर कहानी का नक्शा बनाना व कहानी पढ़कर अपने साथियों के साथ मिलकर कहानी का नक्शा बनाना। अगर आप बच्चों की समझ के स्तर के मुताबिक विषयवस्तु चुनें और अपने कामों को उनके आधार पर बुनें तो क्यों नहीं वे बच्चे भी बोल पड़ेंगे जो अब तक चुप रहने में ही अपनी भलाई समझते आए थे। ◆

लेखक परिचयः करीब 21 वर्षों से प्रारंभिक शिक्षा में शिक्षक शिक्षा, शिक्षण सामग्री एवं पाठ्यपुस्तक निर्माण, शिक्षाक्रम और अनुवाद के क्षेत्र में कार्य। हाल-फिलहाल विभिन्न संस्थाओं के साथ बतौर शैक्षिक सलाहकार कार्यरत हैं।

संपर्क : 9414057424; ravikaant@gmail.com